Date :- 24/5/2020	Degree Part-II (Hons.)
Content Writer :-	Paper :- II
Dr. Abhay Kumar Pathak	Content of Paper :-
Deptt. of Economics,	Indian Economy
Marwari College,	Module-4
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- CAUSES OF INDUSTRIAL BACKWARDNESS IN INDIA
(भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन के कारण)

Scanned with CamScanner

औद्योगिक संरचना से तात्पर्य उद्योगों के ढाँचे या स्वरूप से लगाया जाता है, जो एक समय में एक देश में विद्यमान रहता है। यह स्वरूप या ढाँचा स्थिर नहीं रहता है। जैसे-जैसे किसी देश में उत्पादन के विभिन्न पहलुओं में परिवर्तन होता है वैसे-वैसे उस देश के औद्योगिक संरचना में भी परिवर्तन होता है।

भारत में आर्थिक नियोजन की अवधि में औद्योगिक विकास पर काफी बल दिया गया है तथा कुछ हद तक हम अपने औद्योगिक संरचना में परिवर्तन करने में भी सफल रहे हैं। परन्तु भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था में औद्योगिक विकास के संदर्भ कुछ समस्याएँ हैं, जो इसके विकास में बाधक हैं। इन समस्याओं को ही औद्योगिक पिछड़ापन का कारण कहा जाता है। भारत में औद्योगिक पिछड़ापन के निम्नांकित कारण हैं।—

(I) ऊर्जा की समस्या :— औद्योगीकरण के विस्तार में ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में आज की स्थिति में भी ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति अभी तक सुनिश्चित हो पायी है। इसके फलस्वरूप औद्योगिक विकास की गति तीव्र नहीं हो पा रही है।

(II) उच्च कोटि के प्रशिक्षित कर्मचारियों की समस्या :—

भारत जैसे देश के

औद्योगिक पिछड़ापन का एक महत्वपूर्ण कारण देश में कुशल प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव है। इन प्रशिक्षित कर्मचारियों के नहीं मिलने के कारण भारत औद्योगिक विकास में काफी पिछड़ा है।

(III) उपयुक्त मशीनरी एवं प्लान्ट की समस्या :- औद्योगिक विकास की एक महत्वपूर्ण शर्त यह है कि समयानुकूल मशीनरी एवं प्लान्ट की व्यवस्था होनी चाहिए। भारत में इस तरह के मशीनरी एवं प्लान्ट का नितान्त अभाव है। इस कारण भारत का औद्योगिक विकास पिछड़ा हुआ है।

(IV) कच्चे माल की समस्या :- कच्चे माल की पर्याप्त मात्रा में एवं समय से आपूर्ति उद्योगों के संचालन के लिए आवश्यक है। भारत में अनेक उद्योगों को कच्चे माल के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। इस कारण से अगर कच्चे माल की आपूर्ति में विलंब होता है तो इसका प्रतिकूल प्रभाव भारत के औद्योगिक विकास पर पड़ता है।

(VI) वित्त की समस्या :- औद्योगिकरण की प्रक्रिया में वित्त का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में उद्योगों के विकास में वित्त की समस्या एक महत्वपूर्ण समस्या है। इस हेतु कई

संस्थाएँ स्थापित की गयी है। इन संस्थाओं में मुख्य रूप से भारतीय औद्योगिक विकास निगम लिमिटेड, राज्य वित्त निगम, भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम लिमिटेड, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम इत्यादि है। लेकिन यह सभी संस्थाएँ भारत के औद्योगिक विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है।

(VI) शहरीकरण की समस्या :-

औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप शहरीकरण का जन्म होता है। जिस स्थान पर उद्योग स्थापित हो जाते है, वहाँ जनसंख्या के घनत्व में वृद्धि हो जाती है। इसके फलस्वरूप तंग एवं गन्दी बस्तियों का प्रादुर्भाव होता है। इन तंग बस्तियों के जीवन-शैली का औद्योगिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(VII) श्रमिकों में अनुशासनहीनता की समस्या :-

औद्योगिकरण के महत्वपूर्ण समस्याओं में एक महत्वपूर्ण समस्या श्रमिकों में अनुशासनहीनता की समस्या है। श्रमिक संगठनों का औद्योगिक क्रियाकलापों पर बढ़ते दबाव के कारण औद्योगिक तनावपूर्ण जैसी समस्या भी उत्पन्न होती है। इसके फलस्वरूप भारत जैसे देश में औद्योगिक विकास प्रभावित होता है।

(VIII) औद्योगिक रुग्णता की समस्या :-
देश में अनेक उद्योग रोगग्रस्त हैं, जिससे उनका उत्पादन कार्य ठप है। वर्तमान समय में देश की कुल रुग्ण इकाइयों की संख्या में 97% संख्या लघु इकाई की है।

(IX) स्थापित क्षमता का कम उपयोग :-
भारत में स्थापित क्षमता का एक बड़ा भाग अप्रयुक्त रहता है। स्थापित क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं होने के कारण जहाँ उत्पादन लागत ऊँची बनी रहती है वहीं पूँजीगत साधनों का अपव्यय होता है।

(X) छोटे एवं मध्यम उद्योगों की उपेक्षा :-
भारत में औद्योगीकरण की नीति में छोटे एवं मध्यम उद्योगों की उपेक्षा की गयी है जिसके कारण औद्योगिक विकास की प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो पायी है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारत में औद्योगिक पिछड़ेपन के बहुत सारे कारण विद्यमान हैं। जब तक इन कारणों का समाधान नहीं किया जाता है तब तक औद्योगिक विकास की गति को संतुलित नहीं किया जा सकता।

Scanned with CamScanner